❁ 12 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

❁ **ज्ञान-**

1] जब तुम बच्चों को सत का संग अर्थात् बाप का संग मिलता है तब तुम्हारी चढ़ती कला हो जाती है। रावण का संग कुसंग है, उसके संग से तुम नीचे गिरते हो अर्थात् रावण तुम्हें डुबोता है, बाप पार ले जाता है। बाप की भी कमाल है जो सेकेण्ड में ऐसा संग देते जिससे तुम्हारी गति सद्गति हो जाती है, इसलिए उसे जादूगर भी कहा जाता है।

2] एक पाप करते हैं जो काम कटारी चलाते हैं, दूसरा पाप फिर क्या करते हैं? जो बाप सर्व का सद्गति दादा है, बच्चों को बेहद का सुख देते हैं अर्थात् स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उसे सर्वव्यापी कह देते हैं। यह पाठशाला है, तुम आये हो यह पढ़ने। यह लक्ष्मी-नारायण है तुम्हारी एम-ऑब्जेक्ट।

3] तुम जानते हो अभी हमको पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनना है। हम ही विश्व के मालिक थे। पूरे 5 हजार वर्ष हुए। देवी-देवता विश्व के मालिक हैं ना। कितना ऊंच पद है। जरूर यह बाप ही बनायेंगे। बाप को ही परमात्मा कहते हैं, उनका असुल नाम है शिव।

4] बाप कहते हैं– मीठे-मीठे रूहानी बच्चों, बाप को याद करो। तुम्हारे जो गुरू लोग हैं, वह भी सब देहधारी हैं। अभी तुम आत्माओं को परमात्मा बाप को याद करना है। सुख तब मिलेगा जब तुम पुण्या आत्मा बनेंगे। 84 जन्मों के बाद ही तुम पाप आत्मा बन जाते हो। अभी तुम पुण्य जमा करते हो। योगबल से पापों को खत्म करते हो। इस याद की यात्रा से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो।

5] तुमने 84 जन्म लिए, सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनें। कहते भी हैं भक्ति का फल भगवान देते हैं। भगवान कोई देहधारी को नहीं कहा जाता है। वह है ही निराकार शिव। उनकी शिवरात्रि मनाते हैं तो जरूर आते हैं ना। परन्तु कहते मैं तुम्हारे सदृश्य जन्म नहीं लेता हूँ, मुझे शरीर का लोन लेना पड़ता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। अगर होता तो उनका नाम होता।

6] पहला नम्बर देवता हैं राधे-कृष्ण, जो स्वयंवर के बाद फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। परन्तु यह कोई जानते नहीं।

7] तुम 63 जन्म भक्ति करते आये हो, इस भक्ति से कोई ने सद्गति को पाया है? कोई है जो सद्गति दे? हो नहीं सकता। एक भी वापिस जा नहीं सकता। बेहद का बाप ही आकर सबको वापिस ले जाते हैं।

8] तुम ही इस ज्ञान से नर से नारायण बनते हो। देवताओं की राजधानी स्थापन हो गई फिर तुमको ज्ञान की दरकार नहीं रहेगी।

9] बाप कहते हैं मैं सर्व का सद्गति करने वाला हूँ। मनुष्य, मनुष्य की सद्गति कर न सकें क्योंकि वह विकार से पैदा होते हैं, पतित हैं। वास्तव में कृष्ण को ही सच्चा महात्मा कह सकते हैं। यह महात्मा लोग तो फिर भी विकार से जन्म ले फिर सन्यास करते हैं। वह तो हैं देवता। देवतायें तो सदैव पवित्र हैं। उनमें कोई विकार होता नहीं। उनको कहा ही जाता है निर्विकारी दुनिया, इनको कहा जाता है विकारी दुनिया। नो प्योरिटी।

10] बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरूषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ। यह तो बहुत छोटा सा ब्राह्मणों का युग है। ब्राह्मणों की निशानी चोटी होती है। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र– यह चक्र फिरता ही रहता है। ब्राह्मणों का बहुत छोटा कुल होता है, इस छोटे से युग में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। तुम बच्चे भी हो तो स्टूडेन्ट भी हो, फालोअर्स भी हो। एक के ही हैं। ऐसा कोई मनुष्य होता नहीं जो बाप भी हो, शिक्षा देने वाला टीचर भी हो, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान दाता हो, फिर साथ में भी ले जाये। ऐसा कोई मनुष्य हो न सके।

11] अभी तो सब यहाँ हैं, बाकी जो भी रहे हुए हैं, वह आते रहते हैं। जब तक निराकारी दुनिया से सब आत्मायें आ जायेंगी तब तक तुम इम्तहान में भी नम्बरवार पास होते जायेंगे। इनको कहा जाता है रूहानी कॉलेज। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को पढ़ाने आते हैं, रावण राज्य आया तो फिर शरीर छोड़ अपवित्र राजा बनें और पवित्र देवताओं के आगे माथश टेकने लगे। आत्मा ही पतित अथवा पावन बनती है। आत्मा पतित तो शरीर भी पतित मिलता है।

...2

✺ 12 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

[2]

12] अब आत्मा से खाद निकले कैसे? योग अग्नि चाहिए, उनसे तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। आत्मा में चाँदी, तांबा, लोहा पड़ गया है। यह है खाद। आत्मा सच्चा सोना है। अब झूठी बन गई है। वह खाद निकले कैसे? यह है योग अग्नि, ज्ञान चिता पर बैठे हो। आगे थे काम चिता पर। बाप ज्ञान चिता पर बिठाते हैं। सिवाए ज्ञान सागर बाप के और कोई ज्ञान चिता पर बिठा न सके। मनुष्य भक्ति मार्ग में कितनी पूजा करते रहते हैं लेकिन किसको जानते नहीं। अभी तुम सबको जान गये हो। तुम सब देवता बनते हो तो पिर पूजा की बात ही खत्म हो जाती है। जब रावण राज्य शुरू होता है तब भक्ति शुरू होती है।

✺ योग-

1] मीठे बच्चे– याद की यात्रा से ही तुम्हारी कमाई जमा होती है, तुम घाटे से फायदे में आते हो, विश्व के मालिक बनते हो।

2] बच्चे याद में बैठे थे इसको कहा जाता है याद की यात्रा। बाप कहते हैं योग अक्षर काम में न लाओ। बाप को याद करो, वह है आत्माओं को बाप, परमपिता, पतित-पावन। उस पतित-पावन को ही याद करना है। बाप कहते हैं देह के सब सम्बन्ध छोड़ एक बाप को याद करो। कहते हैं ना आप मुये मर गई दुनिया..... देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध आदि देखने में आते हैं, उनको याद नहीं करो। एक बाप को ही याद करो तो तुम्हारे पाप जल जायेंगे।

3] अब पाप सब कटकर पुण्य कैसे जमा हो? बाप की याद से ही जमा होंगे। आत्मा में मन-बुद्धि है ना। तो आत्मा को बुद्धि से याद करना है। बाप कहते हैं तुम्हारे जो भी मित्र-सम्बन्धी हैं, उन सबको भूलो। वह सब एक-दो को दु:ख देते हैं।

4] अब बाप आत्माओं को कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। तुम सतोप्रधान थे, अब तमोप्रधान बने हो, घाटा पड़ा है फिर जमा करना है।

5] अभी है कलियुग का अन्त। आफतें तो बहुत आने की हैं, फिर उस समय तुम याद की यात्रा में रह नहीं सकेंगे क्योंकि हंगामा बहुत हो जायेगा इसलिए बाप कहते हैं **अब याद की यात्रा को बढ़ाते जाओ तो पाप भस्म हो जायें और फिर जमा भी करो।** सतोप्रधान तो बनो।

✺ धारणा-

1] सजाओं से मुक्त होने के लिए विजय माला का दाना बनने का पुरूषार्थ करना है, रूहानी पण्डा बन सबको शान्तिधाम घर की यात्रा करानी है।

2] याद की यात्रा को बढ़ाते-बढ़ाते सब पापों से मुक्त हो जाता है। योग अग्नि से आत्मा को सच्चा सोना बनना है, सतोप्रधान बनना है।

✺ सेवा-

1] – – –